IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

महादेवी वर्मा का हिन्दी साहित्य में योगदान

डॉ. रजनी सोलंकी

सहायक प्राध्यापक हिन्दी

शासकीय महाविद्यालय भगवानपुरा जिला खरगोन म.प्र.

सारांश

महादेवी वर्मा हिंदी साहित्य में छायावाद की सशक्त हस्ताक्षर हैं। छायावाद के चार स्तंभों में सबसे प्रमुखता से उनका नाम लिया जाता है। महादेवी वर्मा एक प्रसिद्ध कवयित्री, सामाजिक कार्यकर्ता, और स्वतंत्रता सेनानी थीं। महादेवी वर्मा को काव्य जगत की 'आधुनिक मीरा' कहा जाता है। महादेवी वर्मा को उनकी पारिवारिक और सामाजिक रचनाओं के लिए जाना जाता है। हिंदी साहित्य में महादेवी वर्मा बहुमुखी प्रतिभासंपन्न रचनाकार रही है। उन्होंने काव्य के साथ कहानियाँ, रेखाचित्र, निबंध लिखे हैं। महादेवी वर्मा का हिंदी साहित्य को बहुत ही महत्त्वपूर्ण योगदान रहा है। महादेवी वर्मा ने रेखाचित्रों के माध्यम से समाज जीवन के साथ भारत वर्ष की ग्रामीण जनता के दुख दर्द का चित्रण किया है। छायावाद और रहस्यवाद के क्षेत्र में उनका नाम अग्रणी है। उन्होंने ने साहित्य के अतिरिक्त सामाजिक क्षेत्र में उज्ज्वल कार्य किया है। उनका व्यक्तित्व विविध पहलुओं से सजा हुआ था। जिसमें भावुक स्वभाव की छवि काफी प्रभावकारी रही है। महादेवी वर्मा को हिंदी साहित्य में एक अत्यंत महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त है। उनकी रचनाओं ने हिंदी कविता को एक नई ऊंचाई पर पहुंचाया। उनकी रचनाएँ आज भी प्रासंगिक हैं और नई पीढ़ी को भी प्रेरित करती हैं। महादेवी वर्मा ने प्रकृति को उद्दीपन विभाव के रूप में बड़े कलात्मक और मर्मस्पर्शी रूप में प्रस्तुत किया है।

कुंजी शब्द - छायावाद, अनुभूतियाँ, अभिव्यक्ति, मर्मस्पर्शी, रेखाचित्र एवं संस्मरण आदि।

प्रस्तावना -

हिन्दी छायावाद की महतवपूर्ण स्तंभ महादेवी वर्मा का जन्म फर्रुखाबाद उत्तर प्रदेश के एक प्रतिष्ठित परिवार में 26 मार्च सन 1907 को सुबह आठ बजे होली के शुभ त्यौहार के दिन हुआ। उनके पिता गोविंद प्रसाद वर्मा इंदौर के दिल्ली कॉलेज में प्राध्यापक के रूप में कार्य करते थे और उनकी माता हेम रानी देवी एक विदुषी एवं धर्म परायण महिला थी। महादेवी वर्मा के नाना भी कवि थे जो कि बृज भाषा में कविता लिखते थे तथा उनकी प्रवृत्ति भी बेहद धार्मिक थी। महादेवी वर्मा की प्रारंभिक शिक्षा इंदौर के मिशन स्कूल में आरंभ हुई। इसके साथ ही उनके घर पर एक पंडित, एक चित्र शिक्षक, एक संगीत शिक्षक व एक मौलवी भी उनको शिक्षा देने के लिए जाते थे। मात्र 9 वर्ष की आयु में ही उनका विवाह स्वरूप नारायण वर्मा के साथ कर दिया गया पर उस विवाह को उन्होंने कभी स्वीकार नहीं किया। महादेवी वर्मा ने बचपन से करीब सात वर्ष की आयु से ही बृज भाषा में कविताएं लिखना आरंभ किया था और ग्यारह वर्ष की आयु तक आते इन्होंने खड़ी बोली में भी रचनाएं लिखनी प्रारंभ कर दी थी। महादेवी वर्मा ने जब प्रकृति की अनेकरूपता परिवर्तनशील विभिन्नता में, कवि ने एक ऐसा तारतम्य खोजने का प्रयास किया, जिसका एक छोर किसी असीम चेतन में और दूसरा उसके असीम

हृदय में समाया हुआ था तब प्रकृति का एक-एक अंश एक अलौकिक व्यक्तित्व लेकर जाग उठा परन्तु इस सम्बन्ध में मानव-हृदय की सारी प्यास न बुझ सकी क्योंकि मानवीय सम्बन्धों में जब तक यह मधुरता सीमातीत नहीं हो जाती तब तक हृदय का अभाव दूर नहीं होता। इसी से यह अनेक रूपता के कारण पर एक मधुरतम व्यक्तित्व का आरोपण कर उसके निकट आत्मनिवेदन कर देना इस काव्य का दूसरा सोपान बना, जिसे रहस्यमय रूप के कारण ही रहस्यवाद का नाम दिया गया। महादेवी वर्मा की कविताओं में नारी हृदय की कोमलता और सरलता का बड़ा ही मार्मिक चित्रण हुआ है।

हिंदी के रहस्यवादी कवियों में इनका स्थान सर्वोपरि है। महादेवी वर्मा हिन्दी साहित्य में कवयित्री के रूप में अधिक प्रसिद्ध हैं, फिर भी उन्होंने अपनी लेखनी से रेखाचित्र एवं संस्मरण साहित्य के रूप में हिन्दी गद्य साहित्य की भी वृद्धि की है। उन्हें अपनी उत्कृष्ट साहित्यिक योग्यता के लिए कई पुरस्कार और सम्मान प्राप्त हुए हैं।

साहित्यिक विशेषताएँ -

महादेवी वर्मा रहस्यवाद और छायावाद की कवयित्री थीं, अतः उनके काव्य में आत्मा-परमात्मा के मिलन विरह तथा प्रकृति के व्यापारों की छाया स्पष्ट रूप से दृष्टिगोचर होती है। वेदना और पीड़ा महादेवी वर्मा की कविता के प्राण रहे। उनका समस्त काव्य वेदनामय है। उन्हें निराशावाद अथवा पीड़ावाद की कवयित्री कहा गया है। वे स्वयं लिखती हैं, दुःख मेरे निकट जीवन का ऐसा काव्य है, जिसमें सारे संसार को एक सूत्र में बाँध रखने की क्षमता है। महादेवी वर्मा की कविताओं में सीमा के बंधन में पड़ी असीम चेतना का क्रंदन है। यह वेदना लौकिक वेदना से भिन्न आध्यात्मिक जगत की है, जो उसी के लिए सहज संवेद्य हो सकती है, जिसने उस अनुभूति क्षेत्र में प्रवेश किया हो। वैसे महादेवी वर्मा इस वेदना को उस दुःख की भी संज्ञा देती हैं, " जो सारे संसार को एक सूत्र में बाँधे रखने की क्षमता रखता है किंतु विश्व को एक सूत्र में बाँधने वाला दुःख सामान्यतया लौकिक दुःख ही होता है, जो भारतीय साहित्य की परंपरा में करुण रस का स्थायी भाव होता है। महादेवी वर्मा ने इस दुःख को नहीं अपनाया है। वे कहती हैं, " मुझे दुःख के दोनों ही रूप प्रिय हैं। एक वह, जो मनुष्य के संवेदनशील हृदय को सारे संसार से एक अविच्छिन्न बंधनों में बाँध देता है और दूसरा वह, जो काल और सीमा के बंधन में पड़े हुए असीम चेतना का क्रंदन है किंतु, उनके काव्य में पहले प्रकार का नहीं, दूसरे प्रकार का 'क्रंदन' ही अभिव्यक्त हुआ है। यह वेदना सामान्य लोक हृदय की वस्तु नहीं है। संभवतः इसीलिए रामचंद्र शुक्ल ने उसकी सच्चाई में ही संदेह व्यक्त करते हुए लिखा है, " इस वेदना को लेकर उन्होंने हृदय की ऐसी अनुभूतियाँ सामने रखीं, जो लोकोत्तर हैं। कहाँ तक वे वास्तविक अनुभूतियाँ हैं और कहाँ तक अनुभूतियों की रमणीय कल्पना, यह नहीं कहा जा सकता "। इसी आध्यात्मिक वेदना की दिशा में प्रारंभ से अंत तक महादेवी वर्मा के काव्य की सूक्ष्म और विवृत्त भावानुभूतियों का विकास और प्रसार दिखाई पड़ता है।

प्रकृति निरूपण -

प्रकृति के सौन्दर्य के प्रति कवयित्री की संवेदनशीलता में कोई कमी नहीं है, किन्तु प्रकृति को आलम्बन के रूप में कम ही कविता का विषय बनाया गया है। यह स्वल्प शब्द चित्र भी बड़े मौलिक और मनोहारी हैं। प्रकृति को उद्दीपन विभाव के रूप में महादेवी ने बड़े कलात्मक और मर्मस्पर्शी रूप में प्रस्तुत किया है। वे भावों को प्रखरता तथा अनुभूतियों को तरल गम्भीरता प्रदान करके, कथ्य को अत्यन्त हृदयग्राही बना देती है। महादेवी जी का काव्य छायावादी काव्यशैली की सभी विशेषताओं से विभूषित है। वैयक्तिकता प्रकृति का मानवीकरण, श्रृंगार की साध्वी अभिव्यक्ति, सौन्दर्य निरूपण, लाक्षणिक अभिव्यक्ति तथा मानवतावादी दृष्टि आदि आपकी रचनाओं में मौलिक भाव-भंगिमा में प्रस्तुत है। कबीर और जायसी के पश्चात् काव्यपरक रहस्यवाद के दर्शन हिन्दी में महादेवी जी के ही काव्य में होते हैं। महादेवी अज्ञात प्रियतम के प्रति प्रणय निवेदन के क्षणों में आध्यात्मिक छोरों का स्पर्श करने लगती हैं। महादेवी जी ने लोक चेतना से भी स्वयं को पूर्णतया विच्छिन्न नहीं किया है। उनके पास भी सन्देश हैं, प्रेरणा मार्ग-दर्शन है।

अनुभूतियाँ -

महादेवी वर्मा का काव्य अनुभूतियों का काव्य है। उसमें देश, समाज या युग का चित्रांकन नहीं है, बल्कि उसमें कवयित्री की निजी अनुभूतियों की अभिव्यक्ति हुई है। उनकी अनुभूतियाँ प्रायः अज्ञात प्रिय के प्रति मौन समर्पण के रूप में हैं। महादेवी वर्मा का काव्य उनके जीवन काल में आने वाले विविध पड़ावों के समान है।

उनमें प्रेम एक प्रमुख तत्त्व है जिस पर अलौकिकता का आवरण पड़ा हुआ है। इनमें प्रायः सहज मानवीय भावनाओं और आकर्षण के स्थूल संकेत नहीं दिए गए हैं, बल्कि प्रतीकों के द्वारा भावनाओं को व्यक्त किया गया है।

प्रेम भावना -

महादेवी वर्मा केवल मनुष्यों से ही प्रेम नहीं करती थीं, अपितु अन्य मानवेतर प्राणियों से भी उनका गहरा लगाव था। उन्होंने अपने घर में भी कुत्ते, बिल्ली, गाय, नेवला आदि को पाता हुआ था। इनके रेखाचित्रों एवं संस्मरणों में इन मानवेतर प्राणियों के प्रति इनका गहन प्रेम और संवेदना संकृत होता है। जैसे- उसका मुख इतना छोटा था कि उसमें शीशी का निपल समाता ही नहीं था उस पर उसे पीना भी नहीं आता था। फिर धीरे-धीरे उसे पीना ही नहीं, दूध की बोतल पहचानना भी आ गया। आंगन में कूदते फांदते हुए भी भक्तिन को बोतल साफ करते देखकर वह दौड़ आती है और तरत चकित आंखों से उसे ऐसे देखने लगती, मानो वह कोई सजीव मित्र हो।

समाज का यथार्थ चित्रण -

महादेवी वर्मा जी ने अपने गद्य साहित्य में समकालीन समाज का यथार्थ चित्रण किया है। समाज के यथार्थ चित्रण के अन्तर्गत उन्होंने समाज के सुख-दुःख, गरीबी, शोषण आदि का यथार्थ वर्णन किया है।

इनके रेखाचित्रों एवं संस्मरणों में समाज में फैली गरीबी, कुरीतियों, जाति-पाँति, भेदभाव, धर्म, सम्प्रदायवाद आदि विसंगतियों का यथार्थ के धरातल पर अंकन हुआ है। वे एक समाजसेवी लेखिका थीं। वे आजीवन साहित्य सेवा के साथ-साथ समाज का उद्धार करने में लगी रहीं।

वात्सल्य भावना का चित्रण -

महादेवी वर्मा के गद्य साहित्य में वात्सल्य भावना का अनूठा चित्रण हुआ है। उनको मानव ही नहीं मानवेतर प्राणियों से भी वात्सल्य प्रेम था वे अपने घर में पाले हुए कुत्ते, बिल्लियों, नेवला और गाय आदि प्राणियों की एक मां के सेवा करती यही सेवा भावना उनके रेखाचित्र और संस्मरणों में भी अभिव्यक्त हुई है। इसी भाव के मानस हिरणी की मृत्यु की घटना के बाद उन्होंने फिर कभी किसी अन्य हिरण-हिरणी को न पालने का निश्चय किया था।

समाज सुधार की भावना -

महादेवी वर्मा समाज सेवा भावना से ओत प्रोत महिला थी। उनके जीवन पर बुद्ध, विवेकानंद आदि विचारकों का प्रभाव पड़ा जिसके कारण उनकी वृत्ति समाज सेवा की ओर उन्मुख हो गई थी। महादेवी वर्मा ने अपने साहित्य के माध्यम से समाज में फैली कुरीतियों, विसंगतियां, विडम्बनाओं आदि को उखाड़ने के भरपूर प्रयास किए है। इन्होंने अपने गद्य साहित्य में नारी शिक्षा का भरपूर समर्थन किया है तथा नारी शोषण, बाल-विवाह आदि का विरोध किया। उनके समाज सुधार संबंधी विचार उनके प्रायः सभी संस्मरणों में बिखरे पड़े हैं। महादेवी वर्मा ने रेखाचित्रों में बाल-विवाह प्रथा को उजागर किया है। बिना जानने-समझने की उम्र में ही ' बालिका माँ ' तथा ' बिबिया ' का बाल-विवाह हुआ है अनजाने पति की मृत्यु के कारण उन्हें वैधव्य प्राप्त होता है। समाज में विधवा नारी का कोई मूल्य नहीं होता । समाज उसकी ओर हीन दृष्टि से देखता है। उसे हर तरह कमजोर करने की कोशिश करता है । 'बिट्टी', 'बिबिया' का पुनर्विवाह होता है लेकिन उन्हें उस

घर में भी इज्जत नहीं मिलती । उन पर अनेक प्रतिबंध लगाए जाते हैं रेखाचित्रों में लेखिका ने विवाहित नारियों की दास्तान की पोल खोल दी है। महादेवी वर्मा के रेखाचित्रों में से अनेक पात्र विमाता द्वारा पीड़ित हैं।

विमाता के अत्याचारों को रामा, बिंदा, चीनी फेरीवाला, पशु की तरह चुपचाप सहते हैं इनमे से कुछ विमाता के अत्याचारों से दूर भागकर अनाथ बनकर जीवन जीते हैं उनका जीवन ही संघर्षमय बन जाता है । विमाता के अत्याचारों के कारण ही 'चीनी फेरीवाला' की बहन को कुमार्ग पर चलने के लिए विवश होना पड़ता है नारियाँ समाज का अंग होते हुए भी अशिक्षित एवं निम्न जाति की होने के कारण समाज उनकी ओर अलग दृष्टि से देखता है ।

महादेवी वर्मा के रेखाचित्रों में चित्रित नारी कर्तव्यपरायण दिखाई देती है। पति के प्रति उसमें अनन्य प्रेम और विश्वास की भावना है। किसी भी हालत में वह अपने पति का साथ नहीं छोड़ना चाहती। वह अपने परिवार के लिए कुछ भी करने के लिए तैयार है। ये नारियाँ अपने अस्तित्व के प्रति स्वतंत्रता की भावना से जागृत दिखाई देती हैं। रेखाचित्रों में हमें नारी के विविध पहलुओं के दर्शन होते हैं। समाज में विवाह संस्था का अपना ही महत्व रहा है। रेखाचित्रों में बाल-विवाह, बहु-विवाह, अनमेल विवाह, प्रेम-विवाह एवं अंतर्जातिय विवाह का अंकन दिखाई देता है।

भाषा-शैली -

महादेवी वर्मा की कविताओं में कल्पना की प्रधानता है परंतु गद्य में इन्होंने यथार्थ के धरातल पर स्थित रहकर ही अपनी रचनाओं का सृजन किया है। उनकी भाषा अत्यंत उत्कृष्ट, समर्थ तथा सशक्त है। संस्कृतनिष्ठता इनकी भाषा की प्रमुख विशेषता है। इन्होंने संस्कृतप्रधान शुद्ध साहित्यिक भाषा को ही अपनाया है। इनकी रचनाओं में कहीं-कहीं पर अत्यंत सरल और व्यावहारिक भाषा के दर्शन होते हैं। उन्होंने मुहावरों तथा लोकोक्तियों का प्रयोग किया गया है। लक्षणा और व्यंजना की प्रधानता इनकी भाषा की महत्वपूर्ण विशेषता है। उनकी भाषा में चित्रों को अंकित करने तथा अर्थ को व्यक्त करने की अदभुत क्षमता है। महादेवी वर्मा की गद्य शैली बिलकुल अलग है। ये यथार्थवादी गद्य लेखिका थीं। इन्होंने गद्य शैली में मार्मिकता, बौद्धिकता, भावुकता, काव्यात्मक सौष्ठव तथा व्यंग्यात्मकता विद्यमान है। इनकी रचनाओं में उपमा, रूपक तथा श्लेष आदि अलंकारों की छटा देखने को मिलती है। इन्होंने भावात्मक भाषा शैली का प्रयोग किया, जो सांकेतिक एवं लाक्षणिक है। महादेवी वर्मा की कविता वियोग-श्रृंगार प्रधान है। वियोग के जैसे रहस्यमय चित्र उन्होंने अंकित किए हैं, वैसे अत्यंत दुर्लभ हैं। करुण रस की व्यंजना भी उनके काव्य में हुई है। उनके काव्य में सभी छंद मात्रिक हैं। और वे अपने आप में पूर्ण हैं। उनमें संगीत और लय का विशेष रूप से समावेश है। अलंकार योजना अत्यंत स्वाभाविक है और अलंकारों का प्रयोग भावों को तीव्रता प्रदान करने में सहायक सिद्ध हुआ है। उपमा एवं रूपक अलंकारों की अधिकता है।

महादेवी वर्मा काव्य में छायावादी कविता के शिल्प विधान का सफल रूप द्रष्टव्य है। गीतिकाव्य के तत्व अनुभूति प्रवणता, आत्माभिव्यक्ति, संक्षिप्तता, भावान्वित, गेयता आदि उनके काव्य में पूर्णतः दर्शित होते हैं।

उन्होंने स्वयं कहा है, सुख-दुःख की भावावेशमयी अवस्था का विशेष गिने-चुने शब्दों में वर्णन करना ही गीत है। अभिव्यक्ति की कलात्मकता, लाक्षणिकता, स्थूल के स्थान पर सूक्ष्म उपमानों का ग्रहण, कोमलकांत पदावली, कल्पना का वैभव, चित्रात्मकता, प्रतीक विधान, बिंब योजना आदि कलातत्वों का उनकी कविता में पूर्ण अभिनिवेश है। उनकी शिल्प प्रतिभा अनुपम है। उनके अंतस का कलाकार कला के प्रति सर्वदा सचेष्ट रहा है। महादेवी वर्मा के कवि रूप की इस अपूर्व सफलता का मुख्य कारण उनकी गीतोपयुक्त मधुर तथा कोमल भाषा ही है। महादेवी वर्मा ने भाषा को अद्भुत मृदुता और मधुरता प्रदान की है। भाव और लय का मनोहारी संगम प्रस्तुत करने में आपकी भाषा का भी महत्वपूर्ण योगदान है।

निष्कर्ष -

महादेवी वर्मा का जीवन और साहित्यिक योगदान भारतीय साहित्य और समाज के लिए अमूल्य है। उनकी रचनाएँ न केवल हिंदी साहित्य को समृद्ध करती हैं, बल्कि समाज में नारी अधिकारों और सामाजिक न्याय के लिए प्रेरणा भी प्रदान करती हैं। उनका जीवन सादगी, संघर्ष और उच्च आदर्शों का प्रतीक है। इनका काव्य वर्णनात्मक और इतिवृत्तात्मक नहीं है। आन्तरिक सूक्ष्म अनुभूतियों की अभिव्यक्ति उन्होंने सहज भावोच्छवास के रूप में की है।

उन्होंने रूपकात्मक बिम्बों और प्रतीकों के सहारे जो मोहक चित्र उपस्थित किये हैं, वे उनकी सूक्ष्म दृष्टि और रंगमयी कल्पना की शक्तिमत्ता का परिचय देते हैं।

संदर्भ -

1.छायावादी काव्य तथा छायावादोत्तर काव्य , पृष्ठ 5 ।

2. आधुनिक काव्य विवेचन मानविकी विद्यापीठ , पृष्ठ 117 ।

3. हिन्दी साहित्य का इतिहास, पृष्ठ 330, आचार्य दुर्गाशंकर मिश्र ।

4. वर्मा, धीरेन्द्र (1985). 'हिंदी साहित्य का इतिहास, ज्ञानमंडल लिमिटेड, वाराणसी ।